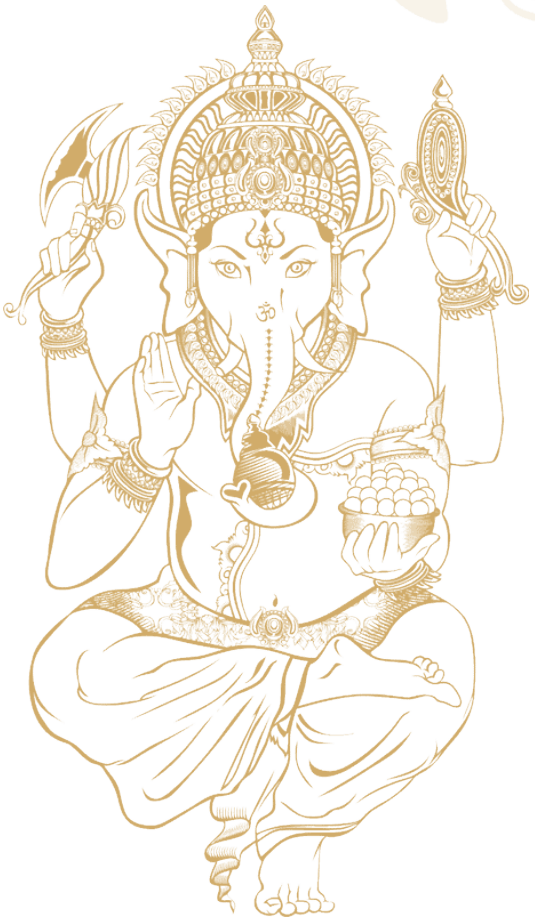

Anvit

26 Jul 2025

12:30 PM

Sangli

Model: Web-KundliPhal **Order No: 119930701**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**26/07/2025**
दिवस	शनिवार
जन्म समय	**12:30:00 कला**
इष्ट	15:50:24 घटी
स्थान	**Sangli**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	16:55:00 उत्तर
रेखांश	74:37:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:31:32 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:58:28 कला
वेलान्तर	-00:06:34 कला
साम्पातिक वेल	08:15:23 कला
सूर्योदय	06:09:50 कला
सूर्यास्त	19:05:55 कला
दिनमान	12:56:05 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	09:20:55 कर्क
लग्नाचे अंश	08:01:45 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	तुला – शुक्र
राशि–स्वामी	**कर्क – चन्द्र**
नक्षत्र–चरण	**आश्लेषा – 4**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	व्यतिपात
करण	कौलव
गण	राक्षस
योनि	मांजर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो–दौलत सिंह
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	श्रावण	4
पंजाबी	संवत : 2082	श्रावण	11
बंगाली	सन् : 1432	श्रावण	10
तमिल	संवत : 2082	अदी	11
केरल	कोल्लम : 1200	काभकतका	10
नेपाली	संवत : 2082	श्रावण	11
चैत्रादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 2
कार्तिकादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 22:42:10
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 15:52:03 कला
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय समयी योग _____: व्यतिपात
योग समाप्ति वेल _____: 28:05:44 कला
जन्म योग _____: व्यतिपात
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 10:57:45 कला
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 51:13:34
भभोग _____: 59:38:43
भोग्य दशा वेल _____: बुध 2 वर्ष 4 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिवस _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
रवि _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगळ _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

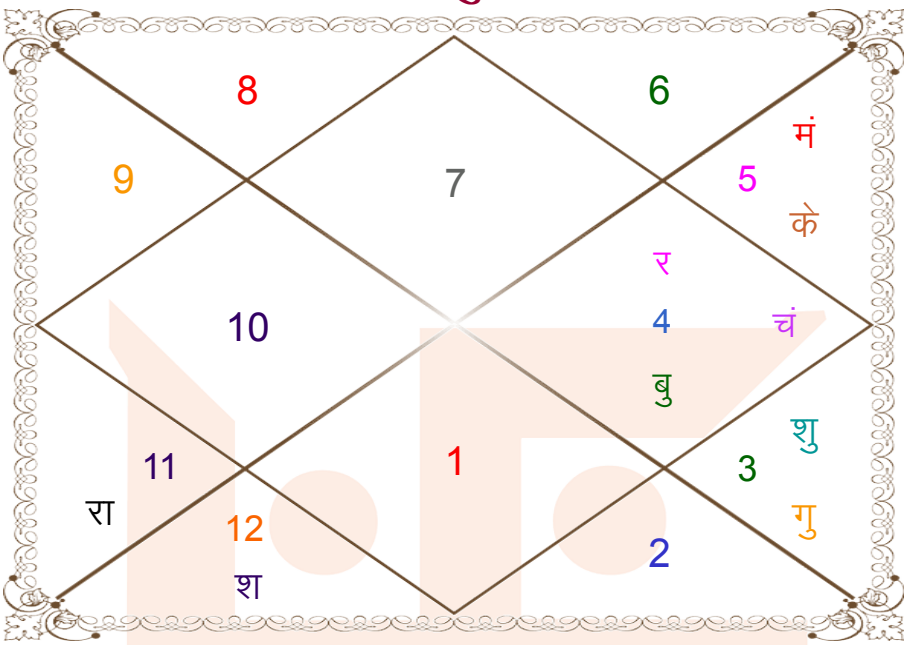

चन्द्र कुंडली

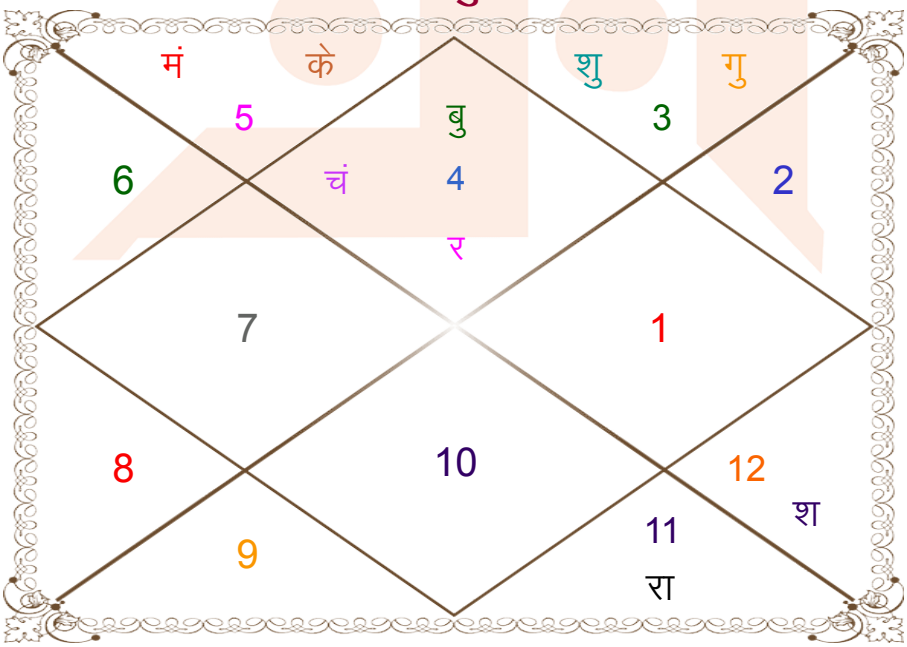

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

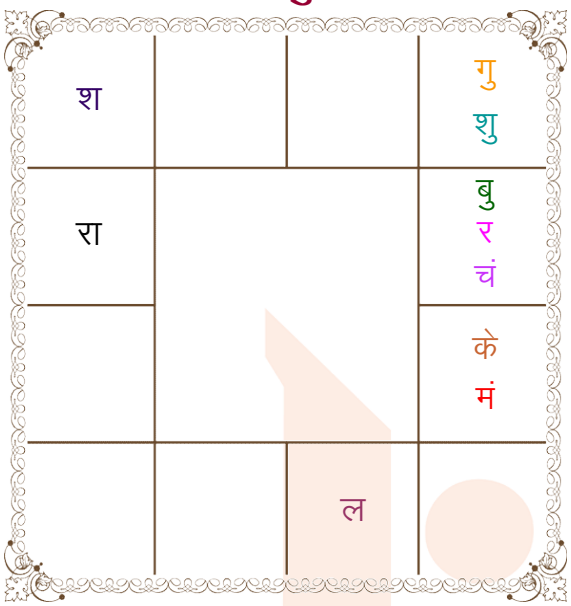

लग्न कुंडली

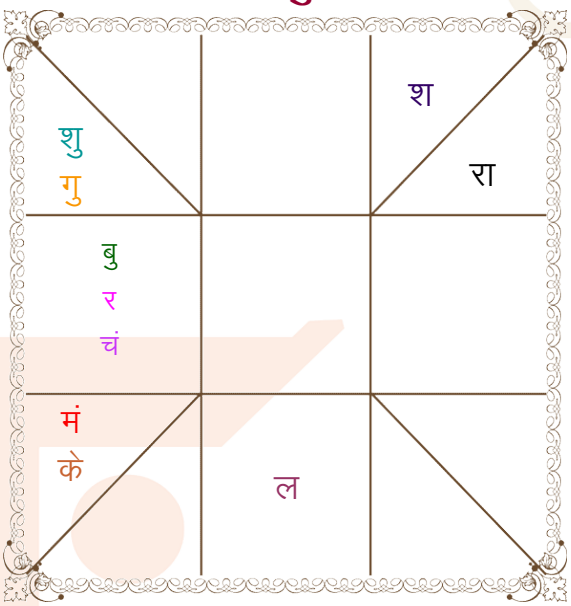

विंशोत्तरी
बुध 2वर्ष 4मा 14दि

बुध	
26/07/2025	
10/12/2130	
बुध	10/12/2027
केतु	09/12/2034
शुक्र	09/12/2054
रवि	09/12/2060
चन्द्र	09/12/2070
मंगळ	09/12/2077
राहु	10/12/2095
गुरु	11/12/2111
शनि	10/12/2130

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 6मा 21दि

भ्रामरी	
26/07/2025	
15/02/2026	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	26/07/2025
मंगळा	27/07/2025
पिंगला	16/10/2025
धान्या	15/02/2026

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	08:01:45	337:04:32	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	———
सूर्य			कर्क	09:20:55	00:57:21	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	28:08:21	13:17:11	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	स्वगृही
मंगळ			सिंह	28:35:16	00:36:34	उ.फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगळ	मित्र राशि
बुध	व	अ	कर्क	18:47:38	00:36:01	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
गुरु			मिथु	16:15:51	00:13:05	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	00:10:12	01:08:53	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगळ	बुध	मित्र राशि
शनि	व		मीन	07:34:29	00:01:19	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:51:11	00:03:41	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:51:11	00:03:41	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	06:31:41	00:01:59	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	———
नेप	व		मीन	07:50:21	00:00:40	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	———
प्लूटो	व		मक	08:21:01	00:01:25	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	———
दशम भाव			कर्क	07:23:22	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	केतु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:12:55

लग्न–चलित

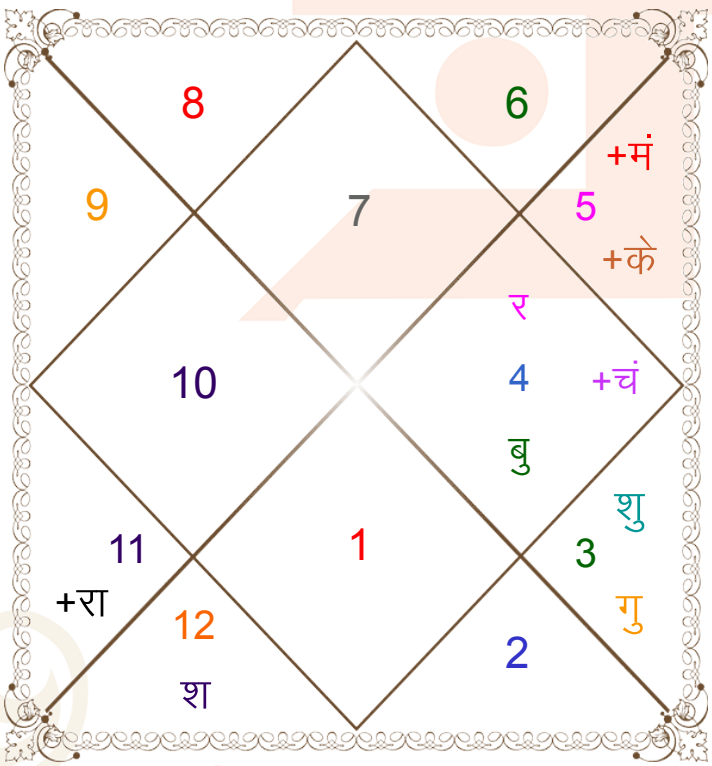

चन्द्र कुंडली

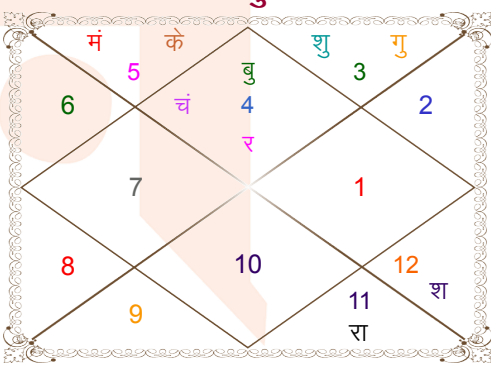

नवमांश कुंडली

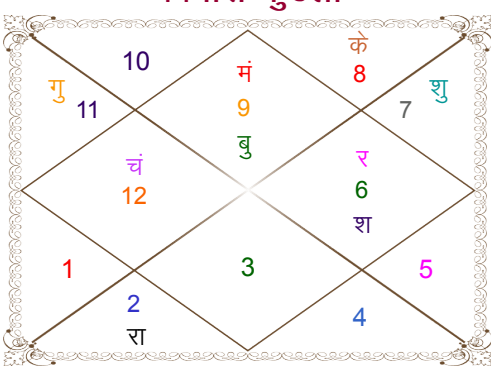

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	22:55:21	तुला	08:01:45
2	तुला	22:55:21	वृश्चिक	07:48:58
3	वृश्चिक	22:42:34	धनु	07:36:10
4	धनु	22:29:46	मकर	07:23:22
5	मकर	22:29:46	कुम्भ	07:36:10
6	कुम्भ	22:42:34	मीन	07:48:58
7	मीन	22:55:21	मेष	08:01:45
8	मेष	22:55:21	वृषभ	07:48:58
9	वृषभ	22:42:34	मिथुन	07:36:10
10	मिथुन	22:29:46	कर्क	07:23:22
11	कर्क	22:29:46	सिंह	07:36:10
12	सिंह	22:42:34	कन्या	07:48:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	08:01:45
2	वृश्चिक	07:23:43
3	धनु	06:59:55
4	मकर	07:23:22
5	कुम्भ	08:45:17
6	मीन	09:38:21
7	मेष	08:01:45
8	वृषभ	07:23:43
9	मिथुन	06:59:55
10	कर्क	07:23:22
11	सिंह	08:45:17
12	कन्या	09:38:21

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

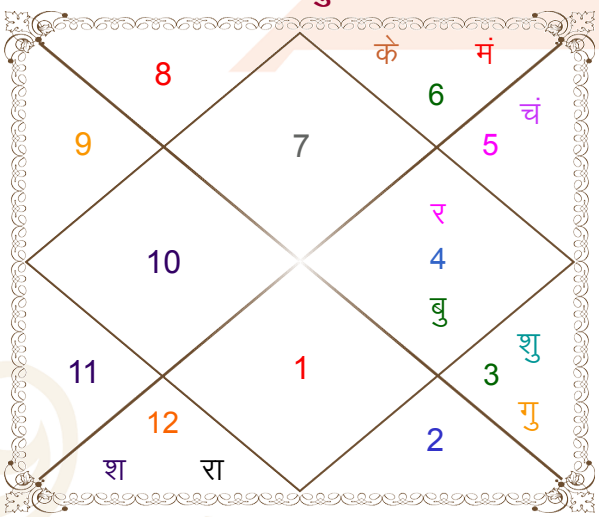

भाव कुंडली

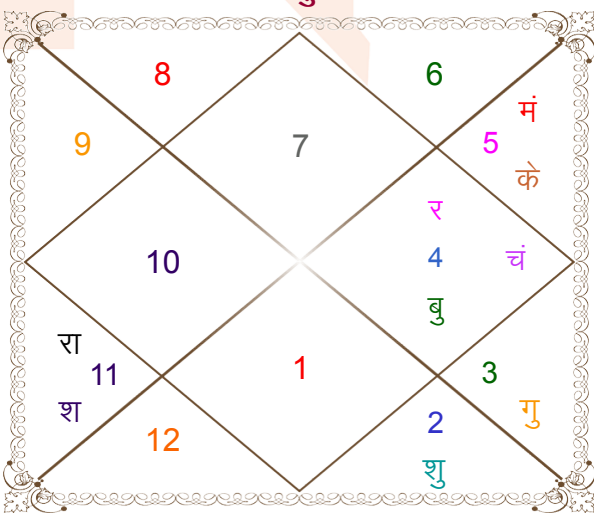

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	वृद्ध	मुदित	सभा	5.04	88 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	बाल	स्वस्थ	शयन	7.11	66 %
मंगळ	आत्मा	भ्रातृ	मृत	मुदित	सभा	1.13	50 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	सभा	0.00	46 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	खल	शयन	6.27	52 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	बाल	मुदित	शयन	6.92	43 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	वृद्ध	शक्त	शयन	1.41	14 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	मुदित	कौतुक	0.00	85 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	खल	सभा	0.00	85 %
एकुण						**27.89**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

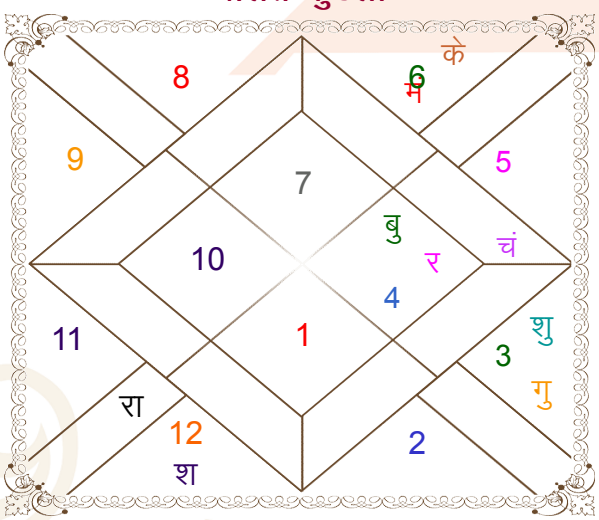

लग्न–चलित

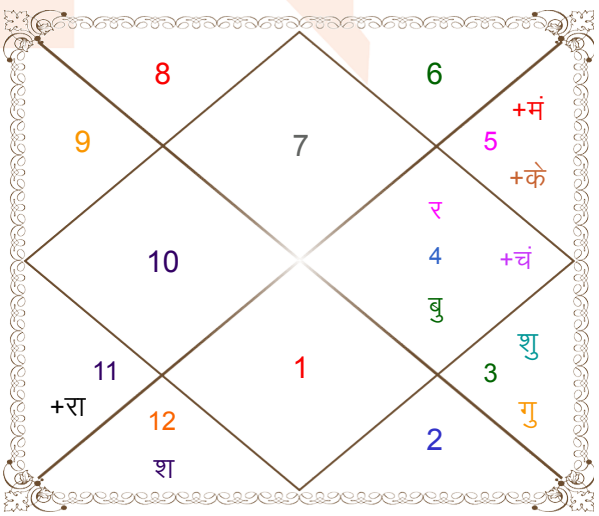

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 2 वर्ष 4 महिना 14 दिवस

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
26/07/2025		10/12/2027		09/12/2034		09/12/2054		09/12/2060	
10/12/2027		09/12/2034		09/12/2054		09/12/2060		09/12/2070	
	00/00/0000	केतु	07/05/2028	शुक्र	10/04/2038	सूर्य	29/03/2055	चंद्र	09/10/2061
	00/00/0000	शुक्र	07/07/2029	सूर्य	10/04/2039	चंद्र	28/09/2055	मंगळ	10/05/2062
	00/00/0000	सूर्य	12/11/2029	चंद्र	09/12/2040	मंगळ	02/02/2056	राहु	09/11/2063
	00/00/0000	चंद्र	13/06/2030	मंगळ	08/02/2042	राहु	27/12/2056	गुरु	10/03/2065
	00/00/0000	मंगळ	09/11/2030	राहु	08/02/2045	गुरु	15/10/2057	शनि	09/10/2066
	00/00/0000	राहु	27/11/2031	गुरु	10/10/2047	शनि	27/09/2058	बुध	10/03/2068
	00/00/0000	गुरु	02/11/2032	शनि	09/12/2050	बुध	04/08/2059	केतु	09/10/2068
	26/07/2025	शनि	12/12/2033	बुध	09/10/2053	केतु	10/12/2059	शुक्र	10/06/2070
शनि	10/12/2027	बुध	09/12/2034	केतु	09/12/2054	शुक्र	09/12/2060	सूर्य	09/12/2070

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
09/12/2070		09/12/2077		10/12/2095		11/12/2111		10/12/2130	
09/12/2077		10/12/2095		11/12/2111		10/12/2130		27/07/2145	
मंगळ	07/05/2071	राहु	21/08/2080	गुरु	27/01/2098	शनि	13/12/2114	बुध	08/05/2133
राहु	25/05/2072	गुरु	15/01/2083	शनि	10/08/2100	बुध	22/08/2117	केतु	05/05/2134
गुरु	01/05/2073	शनि	21/11/2085	बुध	16/11/2102	केतु	01/10/2118	शुक्र	05/03/2137
शनि	10/06/2074	बुध	09/06/2088	केतु	23/10/2103	शुक्र	01/12/2121	सूर्य	09/01/2138
बुध	07/06/2075	केतु	28/06/2089	शुक्र	23/06/2106	सूर्य	13/11/2122	चंद्र	11/06/2139
केतु	03/11/2075	शुक्र	27/06/2092	सूर्य	11/04/2107	चंद्र	13/06/2124	मंगळ	07/06/2140
शुक्र	02/01/2077	सूर्य	22/05/2093	चंद्र	10/08/2108	मंगळ	23/07/2125	राहु	26/12/2142
सूर्य	10/05/2077	चंद्र	21/11/2094	मंगळ	17/07/2109	राहु	29/05/2128	गुरु	01/04/2145
चंद्र	09/12/2077	मंगळ	10/12/2095	राहु	11/12/2111	गुरु	10/12/2130	शनि	27/07/2145

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 2 वर्ष 4 मा 24 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
26/07/2025		10/12/2027		07/05/2028		07/07/2029		12/11/2029	
10/12/2027		07/05/2028		07/07/2029		12/11/2029		13/06/2030	
शनि	03/09/2025	केतु	18/12/2027	शुक्र	17/07/2028	सूर्य	13/07/2029	चंद्र	29/11/2029
बुध	20/01/2026	शुक्र	12/01/2028	सूर्य	07/08/2028	चंद्र	24/07/2029	मंगळ	12/12/2029
केतु	19/03/2026	सूर्य	20/01/2028	चंद्र	12/09/2028	मंगळ	31/07/2029	राहु	13/01/2030
शुक्र	30/08/2026	चंद्र	01/02/2028	मंगळ	06/10/2028	राहु	20/08/2029	गुरु	10/02/2030
सूर्य	18/10/2026	मंगळ	10/02/2028	राहु	09/12/2028	गुरु	06/09/2029	शनि	16/03/2030
चंद्र	08/01/2027	राहु	03/03/2028	गुरु	04/02/2029	शनि	26/09/2029	बुध	15/04/2030
मंगळ	06/03/2027	गुरु	23/03/2028	शनि	13/04/2029	बुध	14/10/2029	केतु	28/04/2030
राहु	31/07/2027	शनि	16/04/2028	बुध	12/06/2029	केतु	21/10/2029	शुक्र	02/06/2030
गुरु	10/12/2027	बुध	07/05/2028	केतु	07/07/2029	शुक्र	12/11/2029	सूर्य	13/06/2030

केतु - मंगळ		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
13/06/2030		09/11/2030		27/11/2031		02/11/2032		12/12/2033	
09/11/2030		27/11/2031		02/11/2032		12/12/2033		09/12/2034	
मंगळ	21/06/2030	राहु	05/01/2031	गुरु	12/01/2032	शनि	05/01/2033	बुध	01/02/2034
राहु	14/07/2030	गुरु	26/02/2031	शनि	06/03/2032	बुध	04/03/2033	केतु	23/02/2034
गुरु	03/08/2030	शनि	27/04/2031	बुध	23/04/2032	केतु	27/03/2033	शुक्र	24/04/2034
शनि	26/08/2030	बुध	21/06/2031	केतु	13/05/2032	शुक्र	03/06/2033	सूर्य	12/05/2034
बुध	16/09/2030	केतु	13/07/2031	शुक्र	09/07/2032	सूर्य	23/06/2033	चंद्र	11/06/2034
केतु	25/09/2030	शुक्र	15/09/2031	सूर्य	26/07/2032	चंद्र	27/07/2033	मंगळ	02/07/2034
शुक्र	20/10/2030	सूर्य	04/10/2031	चंद्र	23/08/2032	मंगळ	19/08/2033	राहु	26/08/2034
सूर्य	27/10/2030	चंद्र	05/11/2031	मंगळ	12/09/2032	राहु	19/10/2033	गुरु	13/10/2034
चंद्र	09/11/2030	मंगळ	27/11/2031	राहु	02/11/2032	गुरु	12/12/2033	शनि	09/12/2034

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु	
09/12/2034		10/04/2038		10/04/2039		09/12/2040		08/02/2042	
10/04/2038		10/04/2039		09/12/2040		08/02/2042		08/02/2045	
शुक्र	30/06/2035	सूर्य	28/04/2038	चंद्र	31/05/2039	मंगळ	03/01/2041	राहु	22/07/2042
सूर्य	30/08/2035	चंद्र	29/05/2038	मंगळ	05/07/2039	राहु	08/03/2041	गुरु	15/12/2042
चंद्र	10/12/2035	मंगळ	19/06/2038	राहु	05/10/2039	गुरु	03/05/2041	शनि	07/06/2043
मंगळ	19/02/2036	राहु	13/08/2038	गुरु	25/12/2039	शनि	10/07/2041	बुध	09/11/2043
राहु	19/08/2036	गुरु	30/09/2038	शनि	30/03/2040	बुध	08/09/2041	केतु	12/01/2044
गुरु	29/01/2037	शनि	27/11/2038	बुध	24/06/2040	केतु	03/10/2041	शुक्र	13/07/2044
शनि	09/08/2037	बुध	18/01/2039	केतु	30/07/2040	शुक्र	13/12/2041	सूर्य	05/09/2044
बुध	29/01/2038	केतु	08/02/2039	शुक्र	08/11/2040	सूर्य	03/01/2042	चंद्र	06/12/2044
केतु	10/04/2038	शुक्र	10/04/2039	सूर्य	09/12/2040	चंद्र	08/02/2042	मंगळ	08/02/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
08/02/2045		10/10/2047		09/12/2050		09/10/2053		09/12/2054	
10/10/2047		09/12/2050		09/10/2053		09/12/2054		29/03/2055	
गुरु	18/06/2045	शनि	10/04/2048	बुध	05/05/2051	केतु	03/11/2053	सूर्य	15/12/2054
शनि	19/11/2045	बुध	21/09/2048	केतु	04/07/2051	शुक्र	13/01/2054	चंद्र	24/12/2054
बुध	06/04/2046	केतु	27/11/2048	शुक्र	24/12/2051	सूर्य	03/02/2054	मंगळ	30/12/2054
केतु	02/06/2046	शुक्र	08/06/2049	सूर्य	14/02/2052	चंद्र	11/03/2054	राहु	16/01/2055
शुक्र	11/11/2046	सूर्य	05/08/2049	चंद्र	10/05/2052	मंगळ	05/04/2054	गुरु	30/01/2055
सूर्य	30/12/2046	चंद्र	09/11/2049	मंगळ	09/07/2052	राहु	08/06/2054	शनि	17/02/2055
चंद्र	21/03/2047	मंगळ	16/01/2050	राहु	11/12/2052	गुरु	03/08/2054	बुध	04/03/2055
मंगळ	17/05/2047	राहु	08/07/2050	गुरु	28/04/2053	शनि	10/10/2054	केतु	11/03/2055
राहु	10/10/2047	गुरु	09/12/2050	शनि	09/10/2053	बुध	09/12/2054	शुक्र	29/03/2055

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
29/03/2055		28/09/2055		02/02/2056		27/12/2056		15/10/2057	
28/09/2055		02/02/2056		27/12/2056		15/10/2057		27/09/2058	
चंद्र	13/04/2055	मंगळ	05/10/2055	राहु	23/03/2056	गुरु	04/02/2057	शनि	09/12/2057
मंगळ	24/04/2055	राहु	24/10/2055	गुरु	05/05/2056	शनि	22/03/2057	बुध	27/01/2058
राहु	21/05/2055	गुरु	10/11/2055	शनि	27/06/2056	बुध	03/05/2057	केतु	17/02/2058
गुरु	15/06/2055	शनि	30/11/2055	बुध	12/08/2056	केतु	20/05/2057	शुक्र	15/04/2058
शनि	13/07/2055	बुध	19/12/2055	केतु	31/08/2056	शुक्र	07/07/2057	सूर्य	03/05/2058
बुध	08/08/2055	केतु	26/12/2055	शुक्र	25/10/2056	सूर्य	22/07/2057	चंद्र	01/06/2058
केतु	19/08/2055	शुक्र	16/01/2056	सूर्य	11/11/2056	चंद्र	15/08/2057	मंगळ	21/06/2058
शुक्र	18/09/2055	सूर्य	23/01/2056	चंद्र	08/12/2056	मंगळ	01/09/2057	राहु	12/08/2058
सूर्य	28/09/2055	चंद्र	02/02/2056	मंगळ	27/12/2056	राहु	15/10/2057	गुरु	27/09/2058

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ	
27/09/2058		04/08/2059		10/12/2059		09/12/2060		09/10/2061	
04/08/2059		10/12/2059		09/12/2060		09/10/2061		10/05/2062	
बुध	10/11/2058	केतु	11/08/2059	शुक्र	08/02/2060	चंद्र	03/01/2061	मंगळ	22/10/2061
केतु	28/11/2058	शुक्र	01/09/2059	सूर्य	27/02/2060	मंगळ	21/01/2061	राहु	23/11/2061
शुक्र	19/01/2059	सूर्य	08/09/2059	चंद्र	28/03/2060	राहु	08/03/2061	गुरु	21/12/2061
सूर्य	04/02/2059	चंद्र	19/09/2059	मंगळ	18/04/2060	गुरु	17/04/2061	शनि	24/01/2062
चंद्र	01/03/2059	मंगळ	26/09/2059	राहु	12/06/2060	शनि	04/06/2061	बुध	23/02/2062
मंगळ	20/03/2059	राहु	15/10/2059	गुरु	31/07/2060	बुध	17/07/2061	केतु	07/03/2062
राहु	05/05/2059	गुरु	01/11/2059	शनि	27/09/2060	केतु	04/08/2061	शुक्र	12/04/2062
गुरु	16/06/2059	शनि	21/11/2059	बुध	18/11/2060	शुक्र	24/09/2061	सूर्य	22/04/2062
शनि	04/08/2059	बुध	10/12/2059	केतु	09/12/2060	सूर्य	09/10/2061	चंद्र	10/05/2062

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	8
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 2, 8, 6
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	81%	व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, दुर्घटणा पासून सुरक्षा, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	77%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	73%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	66%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	61%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
गोमेद	राहु	56%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पोवले	मंगळ	50%	धनार्जन, दम्पति, धन
पुष्कराज	गुरु	47%	नेष्ट भाग्य, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

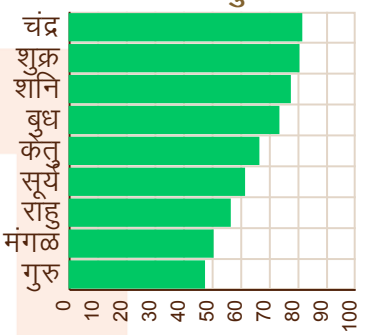

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	10/12/2027	67%	68%	50%	86%	47%	86%	77%	56%	66%
केतु	09/12/2034	47%	68%	56%	73%	47%	86%	64%	38%	78%
शुक्र	09/12/2054	47%	68%	50%	80%	47%	92%	83%	62%	72%
सूर्य	09/12/2060	73%	87%	56%	73%	55%	67%	64%	38%	53%
चंद्र	09/12/2070	67%	93%	50%	80%	47%	80%	77%	38%	53%
मंगळ	09/12/2077	67%	87%	62%	61%	55%	80%	77%	38%	72%
राहु	10/12/2095	47%	68%	25%	73%	47%	86%	83%	69%	53%
गुरु	11/12/2111	67%	87%	56%	61%	61%	67%	77%	56%	66%
शनि	10/12/2130	47%	68%	25%	80%	47%	86%	89%	62%	53%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मोती, हीरा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मोती व नीलम रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, लहसुनिया, माणिक्य, गोमेद एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा

ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने

के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपका शरीर सुंदर, पुष्ट और निरोगी रखेगा। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति अच्छी रखेगा। रत्न शुभता से आप एक अच्छे वक्ता और तर्ककुशल व्यक्ति बनेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। नीलम रत्न से आपके कई नौकर-चाकर और अनुयायी होंगे। आप राजभय से मुक्त रहेंगे। यश संपति और अधिकार की प्राप्ति में भी नीलम रत्न आपके लिए शुभफलकारी रहेगा। यह रत्न आपको गुणों का परीक्षक और श्रेष्ठ कर्म करने वाला व्यक्ति बनाएगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का

कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि षष्ठ भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार हृदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन-यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यो से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल के सभी शुभ फल पाने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते है। मूंगा रत्न धारण करने से आपके कुटुंब सुख व पराक्रम में वृद्धि हो सकती है। यह रत्न आपके दांपत्य सुख में भी बढ़ोतरी करेगा। आप यह रत्न धारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि कर आपके रुके हुए कार्यों को बना सकता है। मूंगा रत्न आपको कुटुंब सुख, आभूषण, गायन के साथ साथ स्वतंत्र व्यापार में सफलता दे सकता है। रत्न धारण से मंगल बलवान होगा और मंगल की शुभता आपको पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपके लिए कार्यो को अंजाम तक पहुंचाना कठिन हो सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव ला सकता है। पुखराज रत्न आपको मित्रों एवं सेवकों का सहयोग प्राप्त करने में बाधाएं दे सकता है। सरकारी कार्यो के लिए भी रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपको अविवेकी कर आपके सदाचार भाव में कमी ला सकता है। इसके प्रभाव से आप अत्यधिक धार्मिक परायण हो सकते है। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों को अधिक से अधिक समय दे सकते है। इस रत्न से आपका कानूनी क्षेत्र, कलर्क का काम और दूर प्रवास में आजीविका कार्य बाधित हो सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(26/07/2025 - 10/12/2027)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, माणिक्य, लहसुनिया, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(10/12/2027 - 09/12/2034)

केतु की दशा में आपका हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, नीलम व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(09/12/2034 - 09/12/2054)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(09/12/2054 - 09/12/2060)

सूर्य की दशा में आपका मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, हीरा, नीलम, मूंगा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(09/12/2060 - 09/12/2070)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(09/12/2070 - 09/12/2077)

मंगल की दशा में आपका मोती, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(09/12/2077 - 10/12/2095)

राहु की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/12/2095 - 11/12/2111)

गुरु की दशा में आपका मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, लहसुनिया, पन्ना, पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि
(11/12/2111 - 10/12/2130)

शनि की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थस्थान चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टमस्थान चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
चतुर्थस्थान चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
अष्टमस्थान चरण	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
चतुर्थस्थान चरण	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------
अष्टमस्थान चरण	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	अल्प बचत
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	स्वास्थ्य
अष्टमस्थान चरण	शुभ	सन्तति सुख

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति एकादश भावात आहे हा भाव आय आणि धना चा भाव आहे यांचे प्रभाव पासून तुमची आर्थिक स्थिति उत्तम रहणारी तसेच पुष्कल धन आणि लाभ अर्जित कराय साठी समर्थ होणारे. आय श्रोत्र जास्ती होणार जीवनात भूमि, चा फायदा होणार तसेच यांचा खरेदी बेची पण करणारे आणि फायदे होणार समाजातीळ एक प्रतिष्ठित व्यद्दि रहणारे तसेच सर्वाला आदर सम्मान देणारे. तुम्हाळा कधी कोणी विशेष सम्मान मिळेल आणि धन ऐश्वर्य युद्ध आपला जीवन सुखी ठेवणारे. एकादश भाव पासून द्वितीय भाव वर मंगळ ची दृष्टि आहे या मुळे कुटुम्बिक सुख शांति तसेच समृद्धि सामान्य होणार कधीं–मधीं कुटुम्बात परस्पर तनाव होणार पण यांचा प्रभाव अनुकूळ रहणार. वाणी मधे काही उष्णता राहील शु आती चा शिक्षण त्रास युद्ध होणार तसेच परिश्रम पासून, आपण या मधे सफळता प्राप्त करणारे. पंचम भाव वर मंगल ची दृष्टि पासून संतति युद्ध होणारे पण काही उशीरात संतति प्राप्ति होणारी, आणि जीवनात यांचा सहयोग प्राप्त होणार. परिश्रम पासून उच्च शिक्षण प्राप्त करणारे तसेच सरकार आणि मोठे अधिकारयां पासून चांगला संबन्ध ठेवणारे आणि फायदे होणार. षष्ठ भावात मंगळ दृष्टि शत्रु पराजित करण्या ची सामर्थ देणार काही प्रतियोगी परीक्षा, मुकद्मा (दावा) किंवा चुनाव वगेरे ला फायदे अर्जित करणारे. पण शरीरा मधे उष्णता पित्त आणि रक्त विकार पासून अजारी होउ सकतो पण दुष्प्रभाव नाय होणार. मामा पासून विशेष संबन्ध नाय होणार तसेच मामा चे जीवनात सुख सहयोग ची कमी आहे ह्या प्रकारी आपण धन ऐश्वर्य आणि वैभव युद्ध होउन प्रसन्नता सह सांसारिक जीवन ठेवणारे आणि यत्न क न कुटुम्बा चे आधुनिक पाळन–पोषण करणारे. ज्या मुळे कुटुम्ब संतुष्ट रहणार आणि सहयोग देणार अतः तुमचा दांपत्य जीवन सुखी आणि सहयोग ची भावना युद्ध होणार.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक के विद्याध्ययन में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है। परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। सन्तान प्रायः विलम्ब से प्राप्त होती है या उसको होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित होता है। पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। जातक का स्वास्थ्य कभी असामान्य हो जाता है।

इस योग के कारण दाम्पत्य जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवार में जातक को अपयश मिलने का भय बना रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं और वे सब जातक का पतन कराने में सहायक होते हैं। कभी जातक को तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के गुप्त शत्रु रहते हैं। वे सब थोड़ा बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। लाभ मार्ग में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है एवं चिन्ता कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है। जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक को कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है और रोग व्याधि में अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट जातक के ऊपर उपस्थित हो जाता है तथा जातक वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है एवं कभी-कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में कई सफलता मिलती हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्तितिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म तूळ लग्नामध्ये झाला आहे, त्यामुळे आपले शरीर निरोगी, सुडौल व आकर्षक असेल. स्वभावाने नरम असाल आणि बोलताना प्रयत्नपूर्वक गोड शब्दांचा वापर कराल. हास्यप्रिय व्यक्ती असून मुलांचे तीव्र आकर्षण असेल. सुंदर वस्तू, सुंदर घ्श्ये पाहून आपल्याला हार्दिक प्रसन्न वाटते. कधी कधी एकदम संतापला तरीही लगेच शांतसुद्धा होता. आपल्या व्यक्तिमत्वाचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे कधीही कोणाला दुःख देत नाही, अगदी प्रबळ शत्रूशी सुद्धा आपला व्यवहार नरम व कोमल असेल. या गुणामुळे समाजामध्ये लोकप्रिय असाल आणि सर्व लोक आपल्याला यथोचित सन्मान देतील. विद्वान व्यक्ती असाल आणि सत्कर्मांमधून उदरनिर्वाह करण्याचा प्रयत्न कराल. कलाकुशलतेमध्ये विशेष रस असेल आणि कलात्मकतेशी भावनात्मक संबंध असेल. नीतीने काम करण्याकडे कल राहील.

आपली सर्व शुभ व महत्वाची कामे नीतीनुसारच संपन्न करण्याचा प्रयत्न कराल. नवनवीन गोष्टी समजून घेण्यामध्ये रूची असेल आणि एखादा नवीन सिद्धांतसुद्धा प्रतिपादित करू शकता. मानसिक शक्ती प्रबळ असेल आणि आपली कामे तत्परतेने कराल, पण एखाद्या विशिष्ट सिद्धांताला चिकटून राहणार नाही तर त्यामध्ये काळानुरूप बदल करत राहाल. भावंडे तसेच नातेवाईकांना पूर्ण सुख व सहयोग द्याल, पण त्यांच्याकडून आपण विशेष सुख, मदत अपेक्षित करू नये.

राजकारणात विशिष्ट यश मिळवू शकता, कारण नेतृत्व गुण आपल्यात आहेत आणि आपल्या अनुयायांना आपल्या नैतिकतेच्या दिशेने नेण्यास समर्थ असाल. दर्शनशास्त्र तसेच अध्यात्मात रूची राहील. बुद्धिमत्ता तीव्र असल्याने कोणत्याही गोष्टीच्या अंतपर्यंत जाण्यास समर्थ असाल. शत्रूला आपल्या बुद्धिच्या जोरावर पराजित करण्यास समर्थ असाल. साधू–संतांवर विशेष श्रद्धा असाल आणि व्यापार किंवा न्यायसंबंधी कामात लाभ प्राप्त होईल. घष्टिकोन विशाल असल्याने समाज यथायोग्य सन्मान देईल. भेदभाव दूर करून सर्वांशी समान वर्तणूक कराल. आपल्या व्यक्तिमत्वात भावुकता व संवेदनशीलता स्पष्ट दिसते. आपल्या कुटुंब किंवा कुळामध्ये श्रेष्ठ असाल आणि स्थिर धनवैभव व ऐश्वर्याने संपन्न असाल.

अशाप्रकारे शांतीप्रिय, नेता, संत, सर्वप्रिय न्यायी व संवेदनशीलतेने युक्त राहून काळ घालवाल. यथोक्तम–

गुशाधिकत्वाद द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मअयतिनैपुणत्वम।
पद्मालया तन्निलये न लालालग्न तुला चेत्स कुलावतंस।।

– जातकाभरणम

म्हणजे तूळ लग्नामध्ये जन्म झालेला जातक व्यापार कुशल, धनवान, स्थिरलक्ष्मीयुक्त व कुळामध्ये श्रेष्ठ असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये मंगळाची राशी वृश्चिक उदित होती. याच्या प्रभावामुळे स्वकर्तृत्व व कष्टाने धनार्जन करण्यात समर्थ असाल. पैतृक संपत्ती कमी मिळेल, पण बहुमूल्य रत्न व धातू स्वकर्तृत्वाने प्राप्त कराल. मालमत्ता किंवा भूमिसंबंधी क्रय विक्रयामध्ये रस असून त्यातून भरपूर लाभ होईल. एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असून कुटुंबाच्या मदतीने आयुष्यात अपेक्षित प्रगती व सन्मान प्राप्त कराल. पण संकटकाळी स्वतःला सांभाळण्यास कमी पडाल.

कुटुंबाला आनंदी व सुविधा पुरवण्यासाठी आपण सतत प्रयत्नरत राहाल आणि कौटुंबिक शांती व सुखसुविधांवर पुष्कळ खर्च कराल. वाणी प्रभावी असेल आणि इतरांना तर्कपूर्ण बोलण्यातून प्रभावीत कराल. मिष्ठान्न आवडते आणि प्रौढावस्थेत डोळ्यांचे विकार होऊ शकतात. धार्मिक परंपरांचे पालन कराल. सज्जनाच्या प्रति मनामध्ये नेहमी आदर असेल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुमची आई आधुनिक विचारांची असेल आणि कुटुंबाला वाहून घेतलेली असेल. कुटुंब सदस्यांची खूप सेवा करेल तसेच स्वादिष्ट भोजन करून तुम्हा सर्वांना खाऊ घालण्यात तिला आनंद वाटत असेल. काटकसरी असेल आणि कुटुंबाचा खर्च कमीत कमी करण्याचा प्रयत्न असेल. खूप कष्टाळू असेल, वृद्धावस्थेत शारीरिक कष्ट होण्याचा संभव आहे. तुमच्या वडिलांसाठी आदर्श जोडीदार असेल आणि त्यांच्या प्रत्येक कामात आपला सहभाग दर्शवेल.

आपल्यापाशी सुंदर, आकर्षक व आरामदायक घर असेल आणि त्यामध्ये आधुनिक सुख सुविधांची सर्व उपकरणे असतील. वडिलांकडून वाहनसुख प्राप्तीसुद्धा होईल. पैतृक संपत्ती मिळेल, पण त्यातून वाद होतील, त्यामुळे ती संपत्तीपासून दूर जाण्याचा प्रयत्न कराल.

शैक्षणिक क्षेत्रात आपल्याला यश मिळेल. उच्च तसेच स्पर्धात्मक परिक्षांमध्ये अपेक्षित यश मिळेल. सरकार किंवा सरकारी उद्योगांमध्ये व्यवस्थापक किंवा प्रशासक म्हणून काम कराल. गुप्त धन किंवा विद्यासुद्धा प्राप्त होतील आणि ज्योतिष, तंत्र, मंत्राचे ज्ञान असेल. गणित, साहित्य किंवा मानसशास्त्राचे सुद्धा आपण ज्ञान ग्रहण कराल. पाण्यासंबंधी कार्यातून सुख तसेच मित्रांपासून लाभ होईल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि शिक्षणाला नेहमी प्राधान्य द्याल. जीवनसाथी म्हणून आपण बुद्धिमान व शिक्षित पत्नीला पसंत कराल. प्रेमभावना मनामध्येच ठेवून त्याचे प्रदर्शन कमीच कराल. त्यामुळे काहीवेळा तुम्ही अडचणीत सापडाल. पत्नीकडून पूर्ण सहकार्य लाभेल आणि कुटुंबकर्तव्यांचे पूर्ण पालन कराल.

संतती लाभेल आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहकार्य आयुष्यभर लाभेल. तुमच्याकडे त्यांची ओढ असेल. आपल्याला यथोचित मान व आदर देतील आणि आपली सेवा करणे आपले कर्तव्य समजतील. तुम्हीसुद्धा त्यांचे शिक्षणाची पूर्ण व्यवस्था कराल आणि त्यांच्यात साहस, निर्भयता, पराक्रम व आत्मविश्वास जागृत ठेवाल. उत्साहवर्धक विचार त्यांच्यामध्ये पेराल. या सर्व गुणांमुळे संतान सर्वत्र यश प्राप्त करेल. वैदिक साहित्य तसेच ज्ञानार्जनामध्ये ओढ असेल आणि परिश्रमपूर्वक ज्योतिषसंबंधी ज्ञान प्राप्त करेल. जुन्या रीतीरिवाजांचे पालन कराल, पूर्वजन्मावर विश्वास असेल. याव्यतिरिक्त धैर्यवान, गंभीर प्रकृति, सत्यवक्ता, प्रसिद्ध, स्वकल्याणासाठी कष्ट सहन करणारे आणि पुण्यवान असाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी आकर्षक तसेच सुशील स्वभावाची असेल. जरी कधी कधी उग्र रूप धारण केले तरी तात्काळ शांतसुद्धा होईल. त्यामुळे दाम्पत्य जीवनावर विशेष प्रभाव पडणार नाही. पण ती आधुनिक विचारांची स्त्री असू शकते, आणि आपल्या कूटनीति व शांत स्वभावाने कुटुंबामध्ये परस्पर सामंजस्य स्थापन करेल.

आपल्याला सामाजिक कामे आवडतात. त्याचबरोबर कौटुंबिक वातावरण सुख व शांत असेल. आपल्याला उंची राहणीमान आवडत असल्याने ते प्राप्त करण्यासाठी कायम प्रयत्नशील राहाल. तुम्ही नेहमी प्रसन्न, शृंगारप्रिय व परस्पर सामंजस्य ठेवण्याचा प्रयत्न करत असल्याने पत्नी व कुटुंबातील इतर सदस्यांना सुख, आराम व इतर गरजा पूर्ण करण्यास तत्पर असाल. बुद्धिमान व चतुर व्यक्ती असल्याने तर्कापेक्षा शांतपणे कोणत्याही विषयी निर्णय घ्याल. आपल्याला चांगले कपडे, खाणे, हॉटेल तसेच क्लबमध्ये जाणे आवडते तसेच विसरा आणि क्षमा करा या सिद्धांतानुसार वागता. तुमच्यासाठी कन्या, कुंभ लग्नाचे जातक अनुकूल असतील. कर्क व मकर राशीच्या व्यक्तींशी संबंध ठेवताना काळजी घ्यावी. आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रात यश मिळवाल. द्रव्यासंबंधी, केमिस्ट, इंजीनिअरिंग, ट्रान्सपोर्ट, पेंटिंग किंवा कलेच्या क्षेत्रात यश प्राप्त करू शकता. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी सुस्वभावी व धनार्जन करण्यास तत्पर असेल आणि आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग देईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य उत्तम राहील व मानसिकघ्ष्ट्या ते शांत स्वभावाचे असतील. ते परिवर्तन व प्रवासप्रेमी असतील. सामाजिक कार्यामध्येसुद्धा त्यांना रूची असेल. ते भावूक व सहानुभूतीयुक्त असतील तसेच स्मरणशक्ती उत्तम असेल.

सरकार व सरकारी कर्मचाऱ्यांकडून आपल्याला अपेक्षित सहकार्य प्राप्त होईल, त्याचबरोबर वित्त व सामाजिक क्षेत्रात कार्यरत राहिल्यास यश प्राप्त कराल. कायदा किंवा वकिलीसंबंधी व्यवसाय आपल्यासाठी उत्तम असेल. त्याचबरोबर पाण्यासंबंधी व्यवसायातूनही लाभ होतील. तसेच रासायनिक क्षेत्र, लेखक, संगीतज्ञ, गायक, वास्तुकला व विक्रेत्याच्या रूपाने आपले कार्य प्रारंभ होईल व त्यात अपेक्षित प्रगती व यश प्राप्त कराल. त्यामुळे उत्तम भवितव्यासाठी आपण यापैकीच एखाद्या व्यवसायाची निवड करावी. मध्यमायुमध्ये आपल्याला अपेक्षित प्रगती, यश व कीर्ती प्राप्त कराल. राजकारणात रूची राहील किंवा राजकीय नेत्यांशी तसेच सरकारी उच्चाधिकाऱ्यांशी चांगले संबंध असतील व वेळोवेळी आपल्याला अपेक्षित लाभ व सहकार्य मिळेल. कोर्टकचेरीत यश मिळेल. याव्यतिरिक्त आपण पुण्यवान, धार्मिक, दयाळू, विनम्र व शांत वृत्तीची व्यक्ती असाल.

फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने बाराव्या भावात असेळ. तुमचे शरीरस्वास्थ्य चांगळे असेळ पण मानसिकदृष्टया उद्विग्नता राहीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असळे तरी खर्च अधिक असतीळ. यंदा चांगल्या कार्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत परिश्रम करावे ळागतीळ पण सफळता मिळेळ. ह्या काळात प्रवास संभवतात. पण त्यावर खर्च अधिक होईळ. भविष्याकरता काही चांगळे संबंध बनतीळ ज्यापासून ळाभ मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ अनुकूळ असेळ ज्यामुळे कष्ट व पराक्रमाने महत्वाच्या कामात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर खर्चाबरोबरच धनप्राप्ती पण होईळ. ज्यामुळे शांति अनुभवाळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ बुध ची महादशा मधीं गुरु चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति केतु ची महादशा मधीं केतु चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी एकादश भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े उन्नती मार्ग प्राप्त करणारे अतः तुमचा मधे साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. म्हणजे शुभ आणि विशेष कार्य सम्पन्न करणारे मित्र पूर्ण सहयोग देणारे विद्वान माणूस बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार आणि समय–समय वर लाभ होणार. काही तरी प्रवास पासून लाभ आणि सम्मान प्राप्त होणार, तसेच भविष्य साठी नवीन आयाम स्थापित होणार. उन्नति साठी परिवर्तन पण होउ सकतो धर्म मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी तीर्थ प्रवास पण सम्पन्न होणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफल होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल रहणार नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य पण सम्पन्न होणार. समाजातील यश प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी तसेच समाज प्रभावित होणार. काही तरी प्रवास सम्पन्न होणारी विशेष प्रयोजने सफल होणारी.

फलादेश - 2026

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी एकादश भावात सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2027

गुरु ह्यावर्षी गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या शुभ प्रभवाने तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. कौटुम्बिक सुखशान्ती व समृद्ध ीकरता हे वर्ष चांगळे आहे. ळोक प्रेमाने वागतीळ. ह्यावर्षी तुम्हाळा पुत्रप्राप्ती संभवते. खर्च वाढल्याने मन खिन्न असेळ. सामाजिक प्रतिष्ठेकरता हे वर्ष शुभ असेळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून आदर मिळवाळ. धार्मिक कार्यांची आवड निर्माण होईळ व वाणीमध्ये माधुर्य व ओजस्विता वाढेळ. अन्य ळोक तुमच्या बोळण्याने प्रभावित होतीळ. ह्यावर्षी माळमन्ता व व्यापारात इच्छित ळाभ मिळवाळ. पण यंदा अन्य गोचरफळ जास्त शुभ नसेळ व अशुभ फळे मिळतीळ. पण दशाफळ अनुकूळ असेळ. तथापि कधी–कधी उपर्युक्त चांगल्या फळांमध्ये न्यूनता येईळ, पण अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानी चांगळी फळे मिळतीळ.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष उन्नतीकारक असेळ. ह्या काळात व्यापरात उन्नती किंवा महत्वाचे बदळ संभवतात. त्याचबरोबर राजकीय क्षेत्रात महत्वाचे पद मिळेळ. राजकारणातीळ महत्वाच्या ळोकांशी संपर्क येईळ. नोकरीत पदोन्नतीची प्रबळ शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. पण प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. ह्या काळात रक्तचापासंबंधी त्रास उद्भवव्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असल्याने सुखातीळा त्रास झाळा तरी शेवटी चांगळी फळे मिळतीळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी एकादश भावात सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2028

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा आहे. ह्या काळात व्यापारात उन्नती होईळ. राजकीयदृष्टया देखीळ हा काळ महत्वाचा आहे. तुम्ही एरवाद्दा क्षेत्रात अधिकाराचे पद प्राप्त कराळ. नोकरी किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ. एरवाद्या महत्वाच्या पदावर नियुक्ती होण्याची शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छित धनळाभ संभवतो. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असल्याने हे वर्ष चांगळे व उन्नतीकारक असेळ.

यंदा गोचरीने राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात तुमच्या पराक्रमात वाढ़ होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांचा समर्थपणे पराभव कराळ. यंदा एरवादी परीक्षा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. हे वर्ष आर्थिकदृष्टया अनुकूल असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छावृद्धीमुळे मानसिक त्रास संभवतो. पण अन्य गोचर व दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

केतु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 07/05/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु एकादश भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र नवम् भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफल होणारी. व्यापार साठी हा समय अनुकूल रहणार नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य पण सम्पन्न होणार. समाजातील यश प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी तसेच समाज प्रभावित होणार. काही तरी प्रवास सम्पन्न होणारी विशेष प्रयोजने सफल होणारी.

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार अतः परिश्रम आणि योग्यता पासून इच्छित परिणाम प्राप्त करणारे. ह्या वेळी प्रभाव युध माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार जूने कार्य पण पूर्ण होणारे. समाजातीळ सहयोग आणि सम्मान प्राप्त होणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे उन्नति होणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध

रहणार. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. ह्या वेळी आवास सम्बन्धातील परिवर्तन होउ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष उन्नतीकारक असेळ. ह्या काळात व्यापरात उन्नती किंवा महत्वाचे बदळ संभवतात. त्याचबरोबर राजकीय क्षेत्रात महत्वाचे पद मिळेळ. राजकारणातीळ महत्वाच्या ळोकांशी संपर्क येईळ. नोकरीत पदोन्नतीची प्रबळ शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. पण प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. ह्या काळात रक्तचापासंबंधी त्रास उद्भवव्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असल्याने सुखातीळा त्रास झाळा तरी शेवटी चांगळी फळे मिळतीळ.

गोचरीने यंदा राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. हे वर्ष भिभपुळे देईळ. ह्या काळात पराक्रम व प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजात उचित सन्मान मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांवर विजय मिळवाळ. यंदा एखादी प्रतिस्पर्धात्मक परीखा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. धनप्राप्ती होईळ. परंतु प्रकृतीच्या दृष्टीने हा काळा चांगळा नाही. पोटाचे विकार किंवा अपचन, गैस वगैरे मुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर इच्छावृद्धी मुळे खर्च वाढेळ. अन्य गोचर यंदा चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे कमीअधिक प्रमाणात शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष केतु ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष शुक्र चा अंतर 07/07/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 12/11/2029 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर चन्द्र ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी एकादश भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच

सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी अत्यंत शुभ आणि महत्व पूर्ण आहे अतः साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. उत्तम कार्य पासून समाज प्रभावित होणार आणि सम्मान प्रदान करणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार आणि सहयोग संवन्ध, स्थापित होणार. सूर्य अंतर्दशा मधे आपण नेहमी मान सम्मान आणि यश प्राप्त करणारे मित्र पासून वांछित लाभ प्राप्त होणार तसेच उच्च पद प्राप्त होणार. कोणी प्रतियागिता परीक्षा मधे सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगरे मधे लाभ आणि सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगेरे मधे लाभ आणि सफलता प्राप्त होणारी कुटुम्ब सुख, समृद्धी आणि शान्ती प्राप्त होणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः ह्या वेळी आत्म विश्वास पासून समस्या समाधान करणारे. तसेच विशेष सफळता प्राप्त करणारे. वर्तमान कार्य क्षेत्र मधे उन्नती मार्ग वर चलणारे आणि व्यापार कार्य करणारे. नोकरी मधे उन्नती करणारे उच्च अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होणार कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी तसेच परस्पर सहयोग रहणार. व्यपार क्षेत्र सम्बन्धी प्रवास होउ सकतो आणि धन लाभ होणार. अतः समय सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(26/07/2025 - 10/12/2027)

बुध की महादशा 26/07/2025 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 10/12/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

महादशा :- केतु
(10/12/2027 - 09/12/2034)

केतु की महादशा 10/12/2027 को आरम्भ और 09/12/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

अपकी जन्मकुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति का लाभ, अप्रत्याशित परिवर्तन, उत्तम शिक्षा और बच्चों से सुख की प्राप्ति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको सभी प्रकार का लाभ, वाहन-सुख और जीवन का आराम मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप साहसी और आत्मविश्वासी

होंगे। केतु के कारण आपको प्रसन्नता मिलेगी और आप आशावादी होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको दाहक पित्त-दोष, पाचन-समस्या, विषाणुजन्य तथा संक्रामक रोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको हर प्रकार के लाभ, लक्ष्य और मनोकामना की पूर्ति और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सट्टे में लाभ की संभावना है और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए शिक्षण, लेखन, विदेशी भाषा, अनुवाद, कम्प्यूटर विज्ञान, लेखाकार्य, ज्योतिष आदि का चयन कर सकते हैं। खेल के सामान, दवा, चमड़े, पशु, किताब, आभूषण, कम्प्यूटर आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्यस्थान में स्थिति अनुकूल रहेगी। आप अपने कार्य सक्रियता से पूरा करेंगे और उच्च पद प्राप्त करेंगे। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। आपके व्यवसाय का विस्तार और कार्य में वृद्धि होगी। आर्थिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। नयी गाड़ी खरीदने में कुछ अड़चन आ सकती है। सम्पत्ति के लेन-देन में अचानक परिवर्तन और नुकसान होगा, इसलिए उचित प्रबन्धन की आवश्यकता है। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा-प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, विधि, दवा, तत्त्व-मीमांसा, खेल आदि में आपकी रुचि होगी। आप सक्रिय, उद्यमी और अत्यन्त आत्मविश्वासी हैं। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और सफलता मिलेगी। आपके जीवन साथी को सट्टे में लाभ होगा, निवेश लाभदायक रहेगा, और अध्यात्म की ओर उनकी रुचि में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को अचानक लाभ और हानि, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरासती सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता की छोटी यात्रा और संबंधियों से सहायता प्राप्त होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि बड़ों को यश, ख्याति, समृद्धि और सफलता मिलेगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सफलता, लाभ और प्रगति होगी। शुक्र के कारण आराम और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ और प्रगति होगी जबकि चन्द्र के कारण कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, स्वास्थ्य उत्तम, शक्ति में वृद्धि तथा जीवन में

सफलता मिलेगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान लाभ और धन-समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि शनि के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, उत्तम शिक्षा, सट्टा-कार्य में वृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(10/12/2027 - 07/05/2028)

आपके लिए केतु महादशा 10/12/2027 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/12/2027 को प्रारंभ होकर 07/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली रहेंगे। आप विविध गतिविधियों में भाग लेंगे और सफल रहेंगे। धनार्जन उत्तम होगा। निवेश से लाभ होगा। संतान से कुछ चिंताएं हो सकती हैं। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। खेलकूद में भाग ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे, उनकी तीर्थयात्रा या सामान्य यात्रा हो सकती है। माता धन संचित करेंगी, साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धन, पिता से उत्तम संबंध, आत्मविश्वास, उत्तम स्वास्थ्य और अच्छी विवेकशक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारी या सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा, सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में हर्ष का वातावरण रहेगा, सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(07/05/2028 - 07/07/2029)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। जीवन सुख-सुविधापूर्ण होगा। बड़ों और गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। विवाह हो सकता है। दान-धर्म के कार्यों में भाग ले सकते हैं। कला में दक्षता की संभावना है। लाभदायक लघु यात्राएं हो सकती हैं। विज्ञापन क्षेत्र में सक्रियता के लिए समय उपयुक्त है। सफलता स्वयं के प्रयास से ही मिल जाएगी।

आपके जीवनसाथी सफलता प्राप्त करेंगे। आपके पिता भी सफल होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, आराम, संभवतः विवाह, सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान के लिए समय शुभ रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे, विवाहित जीवन सुखी रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पुरानी साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी, लघु यात्राएं होंगी, स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली गठिया आदि व्याधि हो सकती है।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(07/07/2029 - 12/11/2029)

आपके लिए केतु महादशा 10/12/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 07/07/2029 को प्रारंभ होकर 12/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(12/11/2029 - 13/06/2030)

आपके लिए केतु महादशा 10/12/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 12/11/2029 से प्रारंभ होकर 13/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। नेकी के कार्य करेंगे। माता के साथ लाभकारी संबंध होंगे। आपकी उपलब्धियों की प्रशंसा होगी। खेती और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है; वाहन सुख रहेगा। आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। उच्चपद प्राप्त हो सकता

है। परिवार से भावनात्मक संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता की आय अच्छी होगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनागम होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अप्रत्याशित घटना, खर्चे, यात्रा और सफलता में बाधा का संकेत है।

आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा; कार्यक्षमता बढ़ेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; सुख-साधन संपन्न होंगे, माता पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय में बढ़ोत्तरी होगी। परामर्शदाता सफल और लोकप्रिय बनेंगे। व्यापारियों को भूतकाल में किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, दूध, चावल, मिश्री, सफेद चंदन का दान करें।